

ज्रूळळ ज्रूळळ ज्रूळळ ज्रूळळ
पंचम गणधर श्री सुधर्मस्वामिने नमः

१७ - चंडपन्नती

उपंग - १७ - गुर्जरछाया

अरिहंतोने नमस्कार थाओ. आ “चंडपन्नति” नामनुं उवांग वर्तमान काणे जे रीते प्राप्त थाय छे. ते रीते तेना अने “सूरपन्नति” उवांगना विषयवस्तुमां कोठे भिन्नता जेवा मणती नथी. (किंचित् ज पाठभेद नजरे पडेल छे.) आवा ज कोठे कारण थी पूज्य आगमोद्धारक आचार्य देवश्री आनंदसागर सूरीश्रवरज्जु महाराज साहेबे पण आ उवांगनी पूज्य श्री मलयगिरि महाराज रचित वृत्तिने छपावेल नथी तेमज आज पर्यन्त अन्य कोठे पण वृत्ति छपावेल नथी. - मुनि दीपरत्नसागर

अने उवांगोमां २०-२० प्राभृतो ज छे. इक्त ‘चंडपन्नति’ मां आरंभिक गाथाओ अतिरिक्त छे ते सिवाय कोठे ફेरकार नथी. आ गाथाओनो अत्रे नही छे.

प्राभृत - १ प्राभृतप्राभृत - १

(१) नवलिन - कवल्य, विकसित शतपत्र कमण जेवा जे नेत्रो जेमना छे, मनोहर गतिथी युक्त जेवा गजेन्द्र समान गतिवाणा छे.तेवा वीर भगवंत जय पाओ.

(२-३) असुर-सुर-गुरु-भुजग आदि सर्वे देवोथी वंदन करायेला, जन्म मरण आदि क्लेश रहित थयेला जेवा अर्हत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, अने सर्व साधुओने नमस्कार करीने स्कुट, गंभीर, प्रगट, पूर्वज्ञ, श्रुतना सारभूत, सूक्ष्मभुद्धि आचार्यो द्वारा उपदिष्ट ज्योतिस् महाराज प्रज्ञप्तिने हुं कहीश.

(४) ईन्द्रभूति गौतम मन, वचन, कायाथी वंदन करीने श्रेष्ठ जिनवर जेवा श्री वर्द्धमान स्वामीने ज्योतिषराज प्रज्ञप्तिने विशेषे पूछे छे.

(आटला अतिरिक्त श्लोक पछी सर्वे विषय वस्तु यावत् वीसमा प्राभृत पर्यन्त समग्र गुर्जरछाया ‘सूरपन्नति’ अनुसार जण्णी लेवी)

चंडपन्नतिनी मुनिदीपरत्नसागरे कहेल गुर्जरछाया पूर्ण

१७ चंडपन्नति - गुर्जरछाया पूर्ण

उपंग - ५ - गुर्जरछाया पूर्ण